सर्वप्रिय, हँसमुख, कर्मशील, सरल, विनम्र.... राजीव जी,

भयंकर भँवर के झंझावातों के थपेड़ों से बचकर कोई नौका किनारे पर आकर डूब जाए तो उसे नियति के अतिरिक्त क्या कहा जाए। कुछ ऐसा ही हुआ हम सबके प्रिय राजीव आर्य जी के साथ। लगभग एक वर्ष तक अपनी बीमारी से बहादुरी पूर्वक जूझकर पुनः स्वस्थ हो चुके थे परन्तु ---- हा! ईश्वरेच्छा! हम सबने इस भयानक समाचार को सुना, उनकी मृत देह को न केवल देखा अपितु अग्नि देव को समर्पित भी किया फिर भी क्या बात है कि इस घटना पर अभी तक विश्वास करने को बुद्धि सहमत नहीं है। वो मंद मंद मुस्कान, आत्मीयता के शब्दों से भरी वह वाणी, सरल विनोदी स्वभाव मस्तिष्क से विदा होने को तैयार नहीं है। उनसे जो एक बार मिला, उनका ही होकर रह गया हर किसी को ऐसा लगता कि राजीव मेरे ही हैं। समझ से परे है कि किसकी हानि अधिक हुई परिवार की, मित्रों की, समाज की --- सब कह रहे हैं अब क्या होगा?

पँजाबी बाग श्मशान में जब हजारों लोग अपने प्रिय नेता के अन्तिम दर्शन की भारी मन से प्रतीक्षा कर रहे थे कि 'राजीव आर्य - अमर रहें' की ध्वनि सुनाई दी और शव यात्रा आ पहुँची, सौम्यता भरा, प्रशान्त चेहरा

मानों हम सबके साथ बात करने के लिए आतुर हों, और हमें अन्तिम संदेश दे रहे हों " कर चले हम फिदा जानो-तन साथियो, अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो। कोई भी ऐसा न बचा जिसकी आंखे नम न हुई हों। परिवार के लोगों का बिलखना स्वाभाविक है अनेकों स्थानों पर देखते हैं लेकिन परिवार से इतर भी सभी लोगों का फूट फूट कर रोना ऐसा पहली बार देखने को मिला, वास्तव में राजीव जी ने अपने आप को आर्यसमाज के बहुत विशाल परिवार का न केवल सदस्य बनाया अपितु दिन रात सेवा करके इस माँ की सेवा की। लगभग 2 वर्ष पूर्व जब वह गुड़गाँव हस्पताल में थे उस समय मेरी माताजी भी वहीं कुछ समय तक थी तब राजीव जी से दो बार मिलना हुआ, शरीर कृशकाय हो चुका था लेकिन चेहरे पर वही प्रसन्नता, ईश्वर पर दृढ़ विश्वास और ठीक होकर आर्यसमाज की सेवा की इच्छा... धन्य हो राजीव। मेरी प्रथम भेंट 2006 अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन दिल्ली की यज्ञशाला व्यवस्था के समय हुई यह भेंट कब मित्रता में परिवर्तित हो गई पता न चला, अधिकांश आर्यसमाजी लोग लगभग इतने ही समय से राजीव जी के विशेष सम्पर्क में आए। 8-10 वर्षों के अल्प समय में ही राजीव आर्यसमाज के क्षितिज में एक चमकता हुआ सितारा बनकर उभरे। ऐसा कैसे हुआ..

राजीव न तो कोई साधु, संन्यासी, ब्रह्मचारी, आचार्य योगी, बहुत बड़े विद्वान, लेखक और वक्ता ही थे फिर भी सबके प्रिय इसलिए थे कि वह सरलता से सबको प्रिय बना लेते थे अपनी सेवाभावना, सबको साथ लेकर चलने की कला और कुशल संयोजक थे। बड़े से बड़े और छोटे से छोटे व्यक्ति के साथ घुलमिल जाना कोई उनसे सीखे। जब भी कोई इनको 'मुख्य अतिथि' आदि बनाकर आमन्त्रित करता तो कहते कि मैं तो सेवक हूं कार्यकर्ता हूं वैसे ही आ जाऊंगा किसी अन्य व्यक्ति को जोड़ने के लिए उसे यह सम्मान दे दो।

आइये अपने इस मित्र की विदाई के समय संकल्प लें कि अपने व्यक्तिगत स्वार्थों, हठों व पूर्वाग्रहों को तिलांजलि देकर एक विनम्र पुत्र की भांति आर्यसमाज रूपी अपनी माँ का नेता बनकर नहीं सेवक बनकर सेवा करेंगे। इस प्रकार राजीव जी सदैव हमारे बीच जीवन्त रहेंगे। कहा भी गया है = कीर्तिर्यस्य स जीवति।

हर्षप्रिय आर्य, गुड़गांव